

विज्ञान : वरदान या अभिशाप

विज्ञान एक वरदान – अर्केडियन फरार लिखते हैं- “विज्ञान ने अंधों को आँखों दी हैं और बहरों को सुनने की शक्ति | उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है | उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है |” यह उक्ति सत्य है | विज्ञान की सहायता से असाध्य रोगों के इलाज ढूँढ लिए गए हैं | कई बिमारियों को समूल नष्ट कर दिया गया है |

रसोई-घर से लेकर मुर्दाघर तक सब जगह विज्ञान ने वरदान ही वरदान बाँटे हैं | विज्ञान की सयाहता से पूरी दुनिया एक परिवार बन गई है | जब चाहे, तब मनुष्य अपने प्रियजनों से बात कर सकता है | घंटे भर में दुनिया का चक्कर लगा सकता है | सैकड़ों में दुनिया-भर को कोई संदेश दिया जा सकता है |

विज्ञान ने दूरदर्शन, रेडियो, विडियो, ऑडियो, चलचित्र आदि के द्वारा मनुष्य के नीरस जीवन को सरस बना दिया है | चोबिसों घंटे चलने वाले कार्यक्रम, नए-नए सुंदर सुस्वादु व्यंजन, सुखदायक रंगीन वस्त्र, सौंदर्य-वर्द्धक साधन विज्ञान की ही देन हैं |

विज्ञान : एक अभिशाप – विज्ञान का सबसे बड़ा कहता है – पर्यावरण प्रदूषण | इसके कारण आज शहरों में साँस लेना दूभर हो गया है | हर जगह शोर, गंदगी और बिमारियों का साम्राज्य-सा फैल गया है | कृत्रिम खादों, दवाइयों के कारण भूमि से उत्पन्न अन्न-फल तक दूषित हो गए हैं |

विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने खतरनाक बम बना लिए हैं | इससे अनेक बार विषैली गैसों तथा रेडियोधर्मी किरने विकीर्ण हो चुकी हैं | भोपाल गैस कांड और ओजोन गैस की परत का फटना इसके ज्वलंत उदाहरण हैं | यातायात की तेज गति के कारण भी मौतें होने लगी हैं | लोगों के शरीर पंगु होने लगे हैं | ये सब जीवन पर अभिशाप हैं |

अमानवीयता – आज का वैज्ञानिक मानव स्वार्थी, छली, चालाक, कृत्रिम और विलासी हो गया है | दया, मानवता, श्रद्धा, आदर, कोमलता जैसे मानवीय गुणों से उसका नाता टूट गया

हैं। ये बातें मनुष्य के लिए अशुभ हैं। विज्ञान ने मनुष्य को बेरोज़गार बना दिया है। सैंकड़ों आदमियों का कम करने वाली मशीनों ने कारीगरों के हाथ बेकार कर दिए हैं।

निष्कर्ष – सच बात यह है कि विज्ञान के सदुपयोग या दुरुपयोग को ही वरदान या अभिशाप कहते हैं। विज्ञान का संतुलित उपयोग जीवनदायी है। उसका अंधाधुंद दुरुपयोग विनाशकारी है।